एकात्म मानववाद और आत्मनिर्भर भारत

डॉ. अनिल कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग

एकात्म मानववाद-

एकात्म मानववाद दर्शन के प्रणेता पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी है। यह दर्शन या विचारधारा पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी को महान मनीषियों के श्रेणी में ला दिया।

"एकात्म मानववाद जो दर्शन है, यह पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के आत्मिक चिंतन की अभिव्यक्ति है जिसकी जड़ें भारतीय चिंतन के भूत में है परंतु दृष्टि भविष्य पर केंद्रित है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी इस विचारधारा के अंतर्गत आधुनिक राजनीति ,अर्थव्यवस्था और समाज रचना के लिए एक बहुआयामी भारतीय पृष्ठभूमि प्रस्तुत किए हैं और यही नहीं बल्कि इस विचारधारा को वर्तमान समय की चुनौतियां एवं समस्याओं के भारत के नजरिए से समाधान के रूप में भी प्रतिपादित किए है ,जो पूंजीवाद और साम्यवाद दोनों के ही विकल्प रूप में है।"

दत्तोपंत ठेंगड़ी जी के शब्दों में , "एकात्म मानववाद का दर्शन या विचारधारा इस संसार को पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की श्रेष्ठतम देन है।"

व्यष्टि का समष्टि में और समष्टि का व्यष्टि में समन्वय ही एकात्म मानववाद है।

एकात्म मानववाद दर्शन का प्रतिपादन पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी द्वारा 1965 में किया गया। इस विचारधारा का उद्भव 'अद्वैत वेदांत' के 'अद्वैतवादी दर्शन' से माना जाता है। एकात्म मानववाद दर्शन ने मानव ,पशु या पादप वर्ग के सभी विभिन्न आत्माओं की एकात्मता के विचार का प्रसार किया। इसके द्वारा नस्ल ,वर्ण ,जाति तथा धर्म पर आधारित अंतर्निहित विविधता को अस्वीकार करते हुए सभी मनुष्यों को इस बड़े जैविक समुदाय का एक अंग माना गया है जो राष्ट्रीय विचार की एक सामान्य चेतना को सांझा करते हैं।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के आर्थिक विचार -

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी अपने आर्थिक विचार के अंतर्गत मुख्यत: कृषि, उद्योग व विकेंद्रीकरण, विदेशी व्यापार, नियोजन व ग्रामीण विकास, स्वदेशी, अंत्योदय और अर्थायाम जैसे आदि बिंदुओं पर दिए हैं।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी आत्मनिर्भरता पर बहुत जोर देते है। उनका कहना है कि राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए देश को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होना बहुत जरुरी है। दीनदयाल जी के कृषिगत विचार की बात करे, उद्योगों का विकेंद्रीकरण के विचार की बात करे, ग्रामीण विकास के विचार की बात करे या स्वदेशी के विचार की बात करे! इन समस्त विचारों का एक मात्र उद्देश्य है देश को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाना।

आत्मनिर्भरता का अर्थ-

आत्मनिर्भरता तीन शब्दों से मिलकर बना है। 'आत्म+निर्भर+ता' अर्थात स्वयं पर निर्भर होने की स्थिति।

देश के लिए आत्मनिर्भर होने का अर्थ यह है कि देश के लिए आवश्यक किसी भी वस्तु का निर्माण देश के भीतर ही हो एवं उस वस्तु के लिए देश किसी बाहरी देश पर निर्भर ना हो।

वर्तमान में दीनदयाल जी का आर्थिक विचार और सरकार की आत्मनिर्भरता पर नीतियां-

भारतीय अर्थव्यवस्था ही नहीं अपितु विश्व अर्थव्यवस्था भी कोरोना संकट के कारण जबरदस्त प्रभावित हुई। इस दौरान भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने अपने 'राष्ट्र के नाम संबोधन' में कोरोना के बाद देश की मजबूत रूपरेखा देशवासियों के सामने रखी। कोरोना के कारण हुए आर्थिक नुकसान एवं आर्थिक ढांचे के चरमरा जाने के बाद सबके मन में यही सवाल था कि आगे भारत की आर्थिक नीति क्या होगी? सरकार किन नीतियों का सहारा लेकर नई आर्थिक व्यवस्था को खड़ा करेगी?

पिछले कुछ दिनों से देश में स्वदेशी एवं आत्मनिर्भर भारत की चर्चा सबसे ज्यादा देखने और सुनने को मिला। प्रधानमंत्री स्वयं 'ग्राम स्वावलंबन' की बात सरपंचों से बातचीत के दौरान करते नजर आएं। भारत के प्रधानमंत्री ने राष्ट्र के नाम संबोधन में 'आत्मनिर्भर भारत अभियान' की घोषणा की। सरकार ने इसके लिए 20 लाख करोड़ रुपए का भारी भरकम आर्थिक पैकेज देने का भी ऐलान किया। प्रधानमंत्री के इस घोषणा के कारण देश के पारंपरिक उद्योग-धंधे जो आज जर्जर स्थिति में दिखाई देते हैं, पुनः तकनीक युक्त होकर भारत को आत्मनिर्भर बनाने में पहली पंक्ति में खड़े नजर आएंगे। मोदी जी ने अपने संबोधन में आत्मनिर्भर भारत बनाने हेतु पांच स्तंभों का जिक्र किया। इसमें "अर्थव्यवस्था, इंफ्रास्ट्रक्चर, सिस्टम टेक्नोलॉजी ड्रिवन, डिमांड एवं सप्लाई की ताकत" को इस्तेमाल करने की बात कही।

अब सरकार इन्हीं चीजों की बुनियाद पर आत्मनिर्भर भारत रूपी इमारत तैयार करने की दिशा में बढ़ रही है। यदि सभी चीजें सही ढंग से बढ़ती रही तो सरकार एवं देशवासियों के दृढ़ विश्वास और आर्थिक पैकेज की संयुक्त शक्ति से निसंदेह हम पुनः एक नए भारत, आत्मनिर्भर भारत का निर्माण कर सकेंगे।

इस आर्थिक पैकेज की मुख्य बात यह है कि यह पैकेज किसी विशेष आर्थिक क्षेत्र या केवल बड़े उद्योगपतियों के लिए नहीं है बल्कि इस पैकेज में किसान, मजदूर, छोटे-मध्यम व्यापारी सभी को शामिल किया गया है।

यह कहना ठीक होगा कि यह पैकेज संघर्षरत कुटीर, लघु एवं सूक्ष्म उद्योगों के लिए एक उम्मीद की किरण की तरह है जिनका सीधा लाभ गांव, किसान, मजदूर, गरीब लोगों और छोटे कस्बों के लोगों को होगा। इससे गांव आत्मनिर्भर होंगे।

प्रधानमंत्री ने स्थानीय वस्तुओं की महत्ता को समझते हुए देशवासियों को लोकल उत्पाद खरीदने एवं उसका प्रचार करने का भी आह्वाहन किए।

यह तभी संभव होगा जब व्यवस्था का ज्यादा से ज्यादा विकेंद्रीकरण हो। हम जैसे ही आर्थिक विकेंद्रीकरण की बात करते हैं स्वतः ही दीनदयाल जी का नाम मानस पटल पर आ जाता है क्योंकि दीनदयाल जी ने अपने आर्थिक विचार में मुख्य रूप से विकेंद्रीकरण का जिक्र करते हैं और साथ ही गांव को मजबूत बनाने की भी बात करते हैं।

दीनदयाल जी के आर्थिक विचार देश को आत्मनिर्भर बनाने में कारगर है चाहे वह कृषि का विचार हो, विकेंद्रीकरण हो, स्वदेशी हो, अंत्योदय का विचार हो।

वर्तमान सरकार ने गांव को मजबूत करने के लिए कई नीतियों को लाया जैसे- ई-मंडी, अन्नदाता को ऊर्जादाता बनाने की अभिनव पहल, गांव को डिजिटल बनाना, जन धन योजना, स्वच्छ भारत योजना और उज्ज्वला योजना आदि योजनाओं के द्वारा गांव को मजबूत करना हो। गांव में रोजगार हेतु सरकार ने पशुपालन एवं बांस की खेती को भी बढ़ावा दिया।

इन सब बातों से यही अर्थ निकलता है कि सरकार ने गांव में रोजगार मूलक योजनाओं के आवश्यकता को समझा और उसकी नीतियों पर दीनदयाल जी के विचारों का प्रभाव रहा।

कोरोना संकट ने इस बात को और मजबूत किया कि गांव के विकास के बिना देश का विकास नहीं किया जा सकता है।

दीनदयाल जी विकेंद्रीकरण के प्रबल पक्षधर थे। वे मानते थे कि हमारे अर्थव्यवस्था का आधार हमारे गांव व जनपद होने चाहिए। हमें आत्मनिर्भर होना चाहिए।

दीनदयाल जी अपने पुस्तक 'भारतीय अर्थनीति -विकास की एक दिशा' में लिखते हैं कि "यह भी आवश्यक है कि हम आर्थिक क्षेत्र में आत्मनिर्भर बने। यदि हमारे कार्यक्रमों की पूर्ति विदेशी सहायता पर निर्भर रहे तो यह अवश्य ही हमारे ऊपर प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से बंधनकारी होगी। हम सहायता देने वाले देशों के आर्थिक प्रभाव में आ जाएंगे। अपनी आर्थिक योजनाओं की सफलता पूर्ति में संभव बाधाओं को बचाने की दृष्टि से हमें अनेक स्थानों पर मौन रहना पड़ेगा।"

भारत गांव और किसानों का देश है। यदि गांव और किसान समृद्ध हो जाए तो देश की प्रगति हर दिशा में संभव है। मजदूरों का पलायन हो, देश के सामने खड़ी आर्थिक चुनौतियां हो, इस स्थिति में निश्चय ही दीनदयाल जी के विचार दर्शन हमें रास्ता दिखा रहा है।

दीनदयाल जी अपने आर्थिक विचार में कुटीर, लघु उद्योगों को बहुत महत्त्व दिए हैं और नई तकनीक को अपनाने की भी बात कही है। यही समय है कि जब देश को आयात निर्भरता छोड़कर स्वदेशी वस्तुओं पर निर्भरता बढ़ानी होगी और निर्यात के लक्ष्य को लेकर आगे बढ़ना होगा।

यह सुखद है कि वर्तमान सरकार दीनदयाल जी के एकात्म मानववाद दर्शन को आत्मसात करते हुए आगे बढ़ रही है और देश को आत्मनिर्भर बना रही है।

प्रासंगिकता-

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के आर्थिक विचार वर्तमान संदर्भ में बिल्कुल प्रासंगिक है। दीनदयाल जी के विचारों को आत्मसात करके ही हम अपने को, गाँव को, समाज को और देश को आत्मनिर्भर बना सकते है। कोरोना के बाद जो देश की हालात है इसने यह साबित कर दिया की बिना गाँव के विकास के हम अपने देश का सर्वांगीण विकास नही कर सकते।

अतः वर्तमान समय की मांग है कि हम अपने गाँवों को आत्मनिर्भर बनाये, जब गांव आत्मनिर्भर बनेगा तभी देश आत्मनिर्भर बनेगा। इस संदर्भ में एकात्म मानववाद बिल्कुल प्रासंगिक है।

लोक सभा अध्यक्ष ओम बिरला जी दीनदयाल जी के 53वीं पुण्यतिथि पर कहते है- "हमे भारत को समर्थ बनाना है तो देश को आत्मनिर्भर बनाना ही पड़ेगा। आत्मनिर्भर बनने का एक मात्र तरीका है कि हम अपनी सामर्थ्य पर विश्वास रखें और स्वाभिमान के साथ स्वावलंबी बनने के मार्ग पर बढ़े। यह वही मार्ग है जो महान युगदृष्टा दीनदयाल जी ने हमे काफी पहले दिखाया था।"

इसी कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने कहा- "हमारी सरकार की नीतियां अंत्योदय और एकात्म मानववाद के मंत्रों पर आधारित है और इन्हीं आदर्शों को लेकर देश सबलता एवं आत्मनिर्भरता के रास्ते पर आगे बढ़ रहा है।" और इसी क्रम में कहते है "आत्मनिर्भर भारत की ही देन है की देश कोरोना काल में अंत्योदय अर्थात सबसे निचले पायदान पर खड़े व्यक्ति को दवाइयां पहुचायी और साथ ही अन्य देशों को भी दवाइयां पहुचायी और आज वैक्सीन पहुंचा रहे है। देश कृषि के साथ रक्षा क्षेत्र में भी आत्मनिर्भर बन रहा है।"

उपरोक्त बातों से यह स्पष्ट होता है की एकात्म मानववाद दर्शन आज बहुत प्रासंगिक है। इस दर्शन को आत्मसात करते हुए देश आत्मनिर्भर भारत की ओर बढ़ रहा है।...

सन्दर्भ-

1. उपाध्याय, दीनदयाल (1958). भारतीय अर्थनीति विकास की एक दिशा. लखनऊ: राष्ट्रधर्म प्रकाशन.

2. उपाध्याय, दीनदयाल (1960). राष्ट्रजीवन की समस्याएं. लखनऊ: राष्ट्रधर्म प्रकाशन.

3. उपाध्याय, दीनदयाल (1972). राष्ट्रचिंतन. लखनऊ: राष्ट्रधर्म प्रकाशन.

4. उपाध्याय, दीनदयाल (1979). राष्ट्रजीवन की दिशा. लखनऊ: लोकहित प्रकाशन.

5. उपाध्याय, दीनदयाल. एकात्म मानववाद. नई दिल्ली: भारतीय जनसंघ कार्यालय.

6. उपाध्याय, दीनदयाल (1991). एकात्म मानव दर्शन (दीनदयाल उपाध्याय, माधव सदाशिव गोलवलकर, दत्तोपंत ठेंगड़ी, तृतीय संस्करण). नई दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन.

7. ठेंगड़ी, दत्तोपंत (1991). पंडित दीनदयाल उपाध्याय: व्यक्ति दर्शन खंड- 1: तत्व जिज्ञासा. नई दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन.

8. कुलकर्णी, शरद अनन्त (2014). पंडित दीनदयाल उपाध्याय: विचार दर्शन खंड-4: एकात्म अर्थनीति. नई दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन.

9. पाठक, विनोद चंद्र (2009). पंडित दीनदयाल उपाध्याय का राजनीतिक चिन्तन. नई दिल्ली: प्रकाशक- आर. डी. पाण्डेय, सत्यम पब्लिशिंग हाऊस.

10. शर्मा, महेश चंद्र (2019). क्रांतिकारी आर्थिक चिंतन. नई दिल्ली: संपादक- प्रभात झा, प्रभात प्रकाशन.

11. गोपाल, कृष्ण (2019). राष्ट्र का राजनीतिक प्रबोधन और एकात्म मानव दर्शन. पंडित दीनदयाल उपाध्याय व्यक्ति और व्यक्तित्व खण्ड - 1, प्रयागराज: संपादक- डॉ. जितेंद्र कुमार संजय और डॉ. इंद्र कुमार ठाकुर, साहित्य भंडार.

12. गुप्त, बजरंग लाल (2014). दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म अर्थ चिंतन. मीडिया-विमर्श.

13. गुप्त, बजरंग लाल (2019). भारतीय अर्थ चिंतन और पंडित दीनदयाल उपाध्याय. पंडित दीनदयाल उपाध्याय: व्यक्ति और व्यक्तित्व खण्ड- 1, प्रयागराज: संपादक- डॉ. जितेंद्र कुमार संजय और डॉ. इंद्र कुमार ठाकुर, साहित्य भंडार.

14. दत्त एवं सुन्दरम (2015). भारतीय अर्थव्यवस्था. एस. चन्द.

15. पुरी एवं मिश्र (2016). भारतीय अर्थव्यवस्था. हिमालय पब्लिशिंग हाउस.

16. लाल, एस. के. एवं एस. एन. लाल (2019). भारतीय अर्थव्यवस्था- सर्वेक्षण तथा विश्लेषण. शिवम पब्लिशर्स, इलाहाबाद.

17. भारतीय अर्थव्यवस्था (2019). प्रतियोगिता दर्पण. आगरा.

18. अमर उजाला- दैनिक समाचार पत्र, वाराणसी.

19. हिन्दुस्तान- दैनिक समाचार पत्र, वाराणसी.

20. इंटरनेट.

Contributors Details:

डॉ. अनिल कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर,

अर्थशास्त्र विभाग, श्री बजरंग पी. जी. कॉलेज, दादर आश्रम, सिकंदरपुर,

बलिया, उत्तर प्रदेश